सुलगती ईटों का धुआँ

पूनम सिंह

सड़क अभी भी धुंध में लिपटी अलसाई सी पड़ी थी । शंतो बांस में बंधा झाड़ू उस पर ऐसे फेर रही थी जैसे पुचकार कर उसे उठा रही हो । हाय ! कितनी रौंदी जाती है सड़क फिर भी कभी उफ तक नहीं करती ———ठीक हमारी तरह ———जो न जाने कितने जन्मों से मैला ढ़ोते , नरक सफाई करते बेबस सी जिन्दगी जिये जाते हैं । लेकिन मिन्ती तो बगावत कर रही है अभी से । कल ही कह रही थी ————'अम्मा बाबू से कहो कोई और काम करे ———दूसरों का हगा मूता चंदन बनाकर अपनी देह पर न मले । मुझे उबकाई आती है जब सुबह उठ कर बाबू शहर भर का गूह मूत धोने बस स्टैंड चला जाता है और घर आकर उसी हाथ से थाली भर भात खाता है । वह सचमुच ओकियाने लगी थी ———ओ–ओ———————।

शंतो ने समझाया था उसे ———'तू तो पागल है री छोरी ———पुश्तैनी काम भी कभी छूटता है किसी से । अब तो जुग कित्ता बदल गया । हमारे बाप दादा तो यह मैला सिर पर उठाकर ले जाते थे । उस समय यह विलायती पखाना कहाँ था कि एक मग पानी डालो और सब साफ । मुझे याद है , एकबार पखाने से भरे कनस्तर को सर पर उठाये मेरी माँ हण्डर की तरफ जा रही थी ——— पीछे से बछिया सी लगी मैं भी उसके साथ थी । फटे कनस्तर से चूता पखाने का पानी उसके सर से होता पूरे बदन पर रीस रहा था । कनस्तर के भीतर बजबजाते पिल्लू रेंगते हुए ऊपर तक चले आये थे । उसे देखकर मैं भी तुम्हारी तरह ओकियाने लगी थी । माँ ने मुझे दूर धकेल कर कहा था ———हरामजादी यह तो रोजी रोटी है हमारी ———इसे देखकर घिनाती है तू ।'

मिन्ती ने माँ से समझना चाहा ———'यह कैसी रीत है अम्मा , किसने चलाई इसे ?'

'मैं क्या जानूँ बेटी ———शायद भगवान ने ही चलाई हो ———तभी तो आज तक यह रीत नहीं बदली । जुग बदल गया उसके साथ हमारा भी बहुत कुछ बदला । सूअर की खोहाड़ी की जगह सरकार ने पक्के की कोठरी बना दी हमारे लिए । मरद मानुषों को सरकारी नौकरी मिली , चापाकल और मुनसपिल्टी का नल तक दिया हमें लेकिन हाथ से यह झाड़ू और माथे से मैला का कन्स्तर किसी ने नहीं उतारा । इसी से कहती हूँ यह भगवान की चलाई रीत है बेटी जिसे कोई नहीं बदल सकता ।'

मिन्ती बेचैन होकर बोली ———''लेकिन 'ज्ञानगंगा' वाली बहन जी तो कहती हैं यह भगवान द्वारा बाँटा हुआ काम नहीं है ——— बड़े लोगों द्वारा स्वारथ के लिए रचा गया पाखण्ड है । उन्होंने डोम चमार कहकर हमें इस तरह किनारे धकेल दिया कि हम इस गबड़े से कभी बाहर नहीं आ सकें । जब तक जियें उनका गूह मूत धोते रहें ———उनके जूते सिलते रहें ———नरक सफाई करते रहें । हम मूरख हैं अम्मा इसीलिए भगवान की मंशा मानकर इस नरक में कीड़े की तरह कुलबुलाते हुए भी खुश हैं ।''

'अरी छोरी तू तो लुत्ती हुई जा रही है रे । तू सेन्टर पर जाना छोड़ दे नहीं तो ये बहन जी तेरा दिमाग खराब कर देंगी । जब से अम्बेदकर नगर में यह सेन्टर खुला है तेरे रंग ढ़ग ही बदल गये हैं । हाथ में सिलेट पेन्सिल पकड़ लेने से तेरी बिरादरी नहीं बदल जायेगी छोरी ! अपनी औकात में रहना सीख ———।'

'अम्मा हर बात पर तू मुझे मेरी औकात क्यों बताती है । तेरे ऐसा सोचने के कारण ही तो कल मिसर टोला में हमें इतना जलील होना पड़ा । कब तक हम इन बाबुओं के पाँव तले रौंदे जायेंगे ———कब तक हमारी बस्तियाँ उनके मुहल्लों से दूर इस तरह एक कोने में बनती रहेंगी ———कब तक हम उनके शरीर से एक हाथ दूर हट कर खड़े होते रहेंगे ————बोलो अम्मा बोलो ?'

शंतो उसके तमतमाये चेहरे को देखकर हक्का बक्का रह गई थी । क्या वह उसी की बेटी मिन्ती है ?

दो दिन पहले का प्रसंग उसकी आँखों में कौंध गया ।

छठ पूजा का सूप दौरा बेचने वह बाभन टोला जा रही थी ——— बोझ अधिक होने के कारण मिन्ती भी उसके साथ थी । रवि बाबू की जनाना ने पाँच सूप खरीदे । भोला बाबू के यहाँ सात सूप और दो बड़े

दौरे खरीदे गये । वकील बाबू की मेहरारू ने जोड़ा सूप लिया । इस तरह चार पाँच घरों में ही उसके सारे सूप दौरे बिक गये लेकिन इसी बीच मिन्ती ने एक काण्ड कर दिया । वकील बाबू की पत्नी ने घर की चौखट से लगकर खड़े होने के कारण उसे टोक कर कहा था ––– 'दूर हट कर खड़ी रह ––– मुझे सब फिर धोना पड़ेगा ।' यह बात उसे भीतर तक धँस गयी ।

शंतो को धिक्कारते हुए उसने कहा ––– 'अम्मा इनकी ड्योढ़ी हमारे खड़े होने से छुआती है लेकिन हमारे बनाये गये सूप डगरे में सूरज देवता को अरघ देकर जो परसाद ये पूरी बिरादरी में बाँट कर खाती हैं वह शुद्ध कैसे रह जाता है अम्मा ? – जरा पूछो न इनसे ।'

वकील साहब की पत्नी शंतो को क्रोध से घूरती हुई बोली ––– 'तेरी बेटी तो बड़ी लड़ाकू है रे ––––– इसे अब कभी साथ लेकर इधर मत आना । अपनी औकात यह नहीं जानती ––– ।'

□

□ □ □ □

झाड़ू से लगकर एक बड़ा सा ढ़ेला शंतो के ख्यालों से टकराता सड़क पर दूर तक चला गया । दायें बायें झाड़ू मारती वह कब लेनिन चौक से चन्द्रलोक मार्केट पहुँच गई –––उसे पता ही नहीं चला । बेटी के उग्र स्वभाव को लेकर वह अक्सर सोच में पड़ जाती है । चौक की दुकानों में कोयले की अंगीठी से काले धुएं उठ रहे थे जिससे कुहासा और गहरा हो गया था । शंतो झाड़ू कांख में दबाकर कान में खोंसी बीड़ी टटोलती सीधे बनवारी के ठेले तक पहुँच गयी । उसे देखते ही बनवारी ने जलते कोयले का एक टुकड़ा उसके आगे कर दिया । दहकते कोयले से अपनी बीड़ी सुलगाती हुई शंतो बोली –––''आज तो बड़ी कनकनी है बीनू भैया –––पूरी देह अकड़ी जा रही है ।

अरे काहे को निकल गई इत्ता सबेरे–कोई नेता वेता आ रहा है क्या –भोर भिंसरे इस शहर में ?''

''नहीं भैया आज बेटी को देखने कुछ मेहमान आ रहें हैं – इसी से काम निपटा रही हूँ । इंतजाम बात भी तो करना है । मछली और दारु के बिना हमारे मेहमान खुश नहीं होते । अभी तक कुछ भी इंतजाम नहीं हुआ है । मिंती के बाबू को अखाड़ा घाट भेजकर ताजा रेहू मंगाऊँगी ।''

बनवारी ठेले के नीचे बैठकर कोयले की अंगीठी को लहकाने के लिए जोर–जोर से पंखा झल रहा था । उसी तरह उकड़ू बना हुआ गर्दन तिरछी करके बोला –––लड़का कैसा ढूढ़ा है शंतो ?

शंतो खुश होकर बोली –––''घर वर अच्छा है भैया । लड़का मुनुसपिल्टी में टैंकर का डरेभर है । दो साल पहले पहली बीबी मर गई । दो साल का बच्चा है – नानी पालती है उसे । लेकिन तुम्हीं कहो भैया सरकारी नौकरी करता लड़का क्या इतनी आसानी से मिलेगा ? बिटिया मेरी बहुत भोली है नहीं समझती है यह सब –कहती है –अभी व्याह की उमर नहीं है मेरी । मुझे पढ़ना है –कुछ करना है । मैला बिष्ठा नहीं उठाना । अरे ,उसकी उमर में मुझे दो–दो बच्चे हो गये थे –घर गिरहस्थी , अपना पुस्तैनी धंधा सब कुछ संभाल लिया था मैंने और यह छोरी कहती है मुझे मैला बिष्ठा नहीं उठाना । सेन्टर वाली बहन जी ने उसके दिमाग में बहुत उल्टी सीधी बातें भर दी हैं । मुझसे कहती है आखर गियान से माथे और हाथ की लकीरें बदल जाती हैं । ऐसा भी कहीं हुआ है भैया ?

बनवारी उसे सांत्वना देता हुआ बोला –'ब्याह के बाद लड़की सयानी हो जाती है शंतो । छः महीने में वह भी पुरखाइन बन जायेगी –ये सारी उल्टी सीधी बातें भूल जायेगी – तू चिन्ता न कर ।'

अंगीठी जल गई थी । अग्नि देवता के लपलपाते जिह्वा को देखकर बनवारी ने उसे शांत करने के लिए उसपर चाय की केतली रख दी और शीशे के ग्लास को धो पोंछ कर करीने से लगाने लगा । इक्का दुक्का ग्राहको को दुकान पर जुटते देख शंतो दूसरी बीड़ी सुलगा कर अपने घर की ओर चल दी ।

मिन्ती चूल्हे पर मड़सटकी (गीला भात) चढ़ा चुकी थी । उसके तीनों छोटे भाई बहन चूल्हे को घेरकर , उसके करीब बैठ कर अपनी देह गरमा रहे थे । हरिया अभी तक खाटपर गुड़मुड़ाया सो रहा था ।

उसे इस रुप में देखते ही शंतो झाड़ू एक ओर पटक कर गुस्से से बिलबिलाती उसपर टूट पड़ी –तू अभी तक टांग पसारे सो रहा है –और मैं पूरा शहर बुहार कर आ गयी । मैंने कहा था दो बोतल दारु मत चढ़ा

–कल मेहमान आने वाले हैं –देर तक चढ़ी रहेगी तो कोई जुगाड़ नहीं हो पायेगा लेकिन करमजला कभी सुनता है मेरी ?

हरिया अधमुंदी आँखों से उसकी ओर देखता याचना करने लगा –––'शंतो मेरा जी ठीक नहीं –––मुझे दिक न करो पूरा बदन ऐंठ रहा है –––मैं नहीं उठूँगा ।'

'उठोगे कैसे नहीं ? आज घर में लोग बाग आयेंगे और तुम लमड़ी तानकर सोये रहोगे ? बस स्टैण्ड का नरक धोने क्या मैं जाऊँगी ? ऊपर तक छेर कर जहाँ घिनाये रहते हैं लोग ।'

उसने गुस्से में उसके बदन पर की दोहर को इतनी जोर से खींचा कि उसके पंजरे में दबी दारु की बोतल नीचे गिरकर टूट गई । उसमें बची दारु जमीन पर दूर तक पसर गई । हरिया की जड़ता और मदहोशी एकबारगी कपूर की तरह उड़ गई । उसने बाज की तरह झपटकर शंतो को दबोच लिया और उसपर लात मुक्के बरसाने लगा –––––'साली हरामजादी भोर होते रगड़ शुरु कर देती है ––– मैं नहीं जाऊँगा डयूटी पर ––––– किसी के बाप का नौकर नहीं हूँ––––– क्या कर लेगी तू ––––– गला तर करने के लिए दो घूँट बचाकर रखा था ––––– कमीनी ने सारा बरबाद कर दिया ।'

वह बाप मैया करती रूई की तरह धुनी जा रही थी ––––– उसके तीनों बच्चे रें रें करते उससे लिपट गये थे ।

मिन्ती निरपेक्ष भाव से चुल्हे को आँच लगाती सोच रही थी –––––अपनी गृहस्थी में मुझे भी यही सब सहना होगा ––––– नरक सफाई और मरद की धुनाई ? उसकी आँखों में विद्रोह की चिन्गारी सुलग उठी । मांड़ के उधियाने से जलती लकड़ी बुझ गई थी । धुएं के बगूले हण्डी के चारों ओर उड़ने लगे थे ।

बांस की पतली–पतली करचियों को फाड़ती शंतो मिन्ती से कह रही थी –––'अब एक भी नया डगरा सेंटर पर ले गई तो मुझसे बुरा कोई ना होगा ––––– कहे देती हूँ । रात दिन मर–मर कर डगरे इसलिए नहीं बुनती कि इसपर तू नकासी करना सीखे । सूप डगरा हर घर की जरुरत है । अनाज बिनने फटकने के लिए सबको चाहिये यह – लेकिन इसपर बेल बूटे टांक कर क्या करेगी तू इसका –कहाँ सजायेगी –अपनी मड़ैया में ? हुनर ऐसा सीख जिससे कुछ कमाई हो सके । यह कढ़ाई वाला डगरा हर घर में नहीं बिकने वाला।

फिर इसे बनाने में जितने पैसे लगते हैं वह क्या तेरी सेंटर वाली बहन जी देंगी ?'

शंतो के स्वर में बेटी के लिए एक तीखी खीझ थी ।

'अम्मा हाथ के हूनर बेकार नहीं होते । इससे कोई लघु उद्योग लगा सकता है । इसके लिए किसी से भीख मांगने की भी जरुरत नहीं । सरकार कर्ज देती है – बहुत कम ब्याज पर । तू बार–बार पुश्तैनी धंधे की बात करती है न – मैं उसी धंधे से जुड़कर तो यह काम सीख रही हूँ । नाहक तू नाराज होती है अम्मा – !'

मिन्ती माँ की खुशामद में लगी थी क्योंकि आज बहुत दिनों बाद माँ ने उससे सीधे मुँह बात की थी ।

अपनी शादी को लेकर उस दिन घर आये मेहमान की मिन्ती ने जिस तरह बेइज्जती की थी , उसके कारण घर में बहुत बबाल मचा था , उसने घर आये हट्टे कट्टे मूँछ वाले रोबीले आदमी को कसकर फटकार लगाई थी –सरम नहीं आती –मेरे बाप के उमर का होकर मुझसे व्याह रचाने आया है – जरूर दारू के लिए मेरे बाप ने सौदा किया होगा तुझसे – लेकिन मैं गाय बाछी नहीं – जा निकल मेरे घर से – नहीं तो कचहरी का रास्ता दिखा दूँगी तुझे ।' मिन्ती की बातों से वह इतना भड़क उठा था कि उसके ही घर में शराब की

बोतल फोड़ डाली और उसके माँ बाप को गाली गलौज करता , धमकियां देता चला गया था । उसके जाने के बाद शंतो रण चण्डिका के रूप में जलती लकड़ी लेकर मिन्ती पर टूट पड़ी थी । भद्दी–भद्दी गालियों से उसे पूरी बिरादरी के सामने नंगा कर दिया था ––––– 'मरौनी साली –– भोंसड़ी किस बात का गुमान है तुझे । क्या सेंटर वाली बहन जी के बेटा भतार से फेरे लेगी तू – वे बैठायेंगे अपने घर तुझे , बोल करमजली – कलमुँही' – मार मार कर उसने मिन्ती को अधमरा कर दिया था ।

फिर कई दिनों तक शंतो उससे किनारा किये रही जैसे मिन्ती उसकी कुछ भी नहीं। उस दिन के बाद आज अचानक संवाद का सूत्र सीधा बैठ गया था । मिन्ती खुश थी माँ अब नाराज नहीं है । लेकिन दूसरे ही क्षण मिन्ती की बातों से शंतो फिर भड़क उठी ।

'देख मिन्ती , मैं बार–बार तुझे अगाह करती हूँ–––तू उनकी बराबरी का सपना मत देख नहीं तो एक दिन अपने खोदे कब्र में तू खुद गड़ेगी । यह उधोग , कल , कारखाने की बातें किससे सीख रही है तू ? भंगी मेहतर का व्यवसाय नहीं बदल सकता बेटा – दुनिया चाहे जितनी बदल जाय ।'

मिन्ती ने पहली बार माँ की आँखों में अपनी नीची जाति को लेकर एक गहरा अवसाद देखा । वह उसकी छाती से जा लगी । उसकी आँखों में कई दिनों से घुमड़ता सावन अछो धार बरसने लगा ।

''अम्मा यह जाति का दंश सूल की तरह हर घड़ी हमारे कलेजे को छेदता रहता है । हम एकजुट होकर इसे क्यों नहीं उखाड़ फेंकते ? बरसों से चली आ रही रीति को अपनी नियति मानकर चुपचाप सहे क्यों जाते हैं ? कभी मन में यह सवाल क्यों नहीं उठता कि पूरे शहर के पखाने हम ही क्यों धोयें ? नालियों सड़कों की सफाई हम ही क्यों करें ? गन्धाते मवेशियों , लावारिश लाशों की डोली सजा हम ही क्यों ले जायें ? क्यों अम्मा क्यों ?''

शंतो मुँह फाड़ कर अपनी बेटी को एकटक देख रही थी । यह मेरी कोख से पैदा हुई संतान है या किसी ऊँचे कुल खानदान की पढ़ी लिखी लड़की । मिन्ती को अपनी देह से अलग करते हुए उसने सहमे स्वर में पूछा –––''इतनी बड़ी–बड़ी बातें तू कहाँ से सीख गयी मिन्ती ?''

'बहन जी से –किताबों से और अम्बेदकरजी की जीवनी से ––––– हम सब उन्हीं की संतान हैं अम्मा –– क्या हम इतिहास नहीं बदल सकते ? इस नरक से नहीं निकल सकते ?'

शंतो का दिल बड़ी जोर से धक–धक करने लगा जैसे कोई अनहोनी बात कह गई हो उसकी बेटी।

अम्बेदकर नगर के लिए वह एक ऐतिहासिक दिन था । वार्ड कमिश्नर के चुनाव में नामांकन के लिए दलित समुदाय का एक युवा प्रत्याशी बिरजू का पूरी युवा मंडली को लेकर गाजे बाजे के साथ कचहरी परिसर में जाना – पूरे शहर के लिए एक खबर बन गई थी । इस खबर की एक मुख्य खबर यह थी कि – इस मंडली का नेतृत्व एक जवान भंगी लड़की कर रही थी जिसके कंठ स्वर का जादू पूरे कचहरी परिसर में एक अद्भुत समां बांध गया था – 'हम होंगे कामयाब – मन में है विश्वास – पूरा है विश्वास – हम होंगे कामयाब एक दिन' के बोल से पूरा परिसर गूँज रहा था । सेंटर पर सीखे गये गीत को मिन्ती आह्वान के स्वर में गा रही थी , उसके पीछे सामूहिक स्वर लहरियों का नाद अपने पराक्रम का परचम लहराता दिख रहा था । लोग लुफ्त उठाकर यह नजारा देख रहे थे । दो बार लगातार 33 न० वार्ड के कमिश्नर रह चुके श्री हरिचरण गोस्वामी के लिए यह एक अप्रत्याशित खबर थी जिसने उन्हें विचलित कर दिया था । इसका कारण यह था कि इस बार चुनाव में वार्ड का भौगोलिक विस्तार कुछ इस तरह हुआ था कि दलितों की संख्या नाला रोड बहलखाना रोड और अम्बेदकर नगर को मिलाकर फारवर्ड क्लास के आधा तक पहुँच गई थी और इस आँकड़े ने डी क्लास को इस चुनाव में एक निर्णायक की भूमिका में ला खड़ा किया था । इससे पहले के चुनाओं में नाला रोड में रहने वाले मुसहर और धांगड़ जाति के लोग 34 न० वार्ड के मतदाता हुआ करते थे जिनके भीतर की उष्मा और नमी को हरिचरण गोस्वामी ने कभी नहीं परखा था । लेकिन इस बार 33–34 वार्ड के एक हो जाने के कारण आँकड़ों का समीकरण बैठाना उनके लिए आसान नहीं था । चुनाव के गणित में वे बार–बार उलझ रहे थे । आज के दिन 33 न० वार्ड में मतदाताओं की संख्या तेरह सौ के करीब है जिसमें छः सौ की आवादी डोम , दुसाध , चमार , मुसहर और धांगड़ों की

है । दूसरी ओर गोस्वामी अपने समानान्तर रवि वर्मा और शोभा आनंद को भी खड़े देख रहे थे । कमजोर प्रत्याशी होते हुए भी कुछ वोट तो वे काटेगें ही । उन्हें याद आ रहा था पिछले चुनाव में बी० रोड और ए० नगर के डोम चमारों को उन्होंने दारू की बोतल और हरी पत्तियों की गंध से बेसुध करके अपने पक्ष में कर लिया था लेकिन इस बार ए० नगर , बी० रोड और एन० रोड के बीच का दलित प्रत्याशी है – ऐसे में ऊँट किस करवट बैठेगा कहना कठिन था । बिरादरी का मोह भंग क्या इतनी आसानी से संभव होगा ?

ये सारी स्थितियाँ गोस्वामीजी को बहुत बेचैन और परेशान कर रही थी । बदलते परिदृश्य में समय की अघोषित चुनौती को स्वीकार करना उनके लिए कठिन था ।

धूम धड़ाके के साथ बिरजू के नामांकन की खबर से उस दिन हरिचरण गोस्वामी विचलित थे । उनके बैठकखाने में इष्ट–मित्रों , सगे–संबंधियों की बड़ी भीड़ जुटी थी । नये नायक के नाम से सभी उद्वेलित और आक्रोशित थे । गंभीर विचार विमर्श का दौर चल रहा था । वोट खरीदने और दलितों को आपस में तोड़ने की साजिश रची जा रही थी । हरिचरण गोस्वामी गंभीर मुद्रा में बैठे सब सुन रहे थे । लेकिन भीतर एक अंधड़ चल रहा था–कल का लौंडा–जाति का चमार–मुझे ललकार रहा है ?

उनके चेहरे पर तनाव की लकीरें उभर आई थीं जिसे छोटे भाई कालीचरण ने भांपते हुए कहा – भैया आप क्यों परेशान हैं ? गिदड़ की जब मौत आती है तो वह शहर की ओर भागता है । इस साले का भी यही हाल होना है । आपको याद होगा – पिछले वर्ष राम जानकी मंदिर में दलित समुदाय के कुछ लोगों ने पूजा अर्चना के लिए अपने अधिकार को लेकर बहुत बवाल मचाया था । उसकी अगुआई करने वाला यही विरजू था जिसका नाम अखबार में भी छपा था । उस समय कलक्टर रघुवंश मीणा ने इन दलितों को बहुत शह दी थी । उसी के आदेश पर इन्हें मंदिर में पूजा अर्चना की छूट मिली थी । तब से यह अपने को दलित समुदाय का कर्णधार समझने लगा है । इस बार तो इसे सबक सिखाना ही होगा ।

'अभी कुछ दिन पहले पन्नालाल के भट्ठे पर भी इसने बहुत हंगामा मचाया है ' –गोस्वमीजी के आत्मीय मित्र महेश ने उसके बारे में एक और नई जानकारी दी ।

कैसा हंगामा ?

पूराने मुंशी हरिहर शर्मा की इसने जम कर धुनाई कर दी थी । मजदूरों के रोज से कुछ पैसे इधर उधर हो गये थे – बस इसी बात पर उसे दबोच लिया था कि तुम गरीबों का पैसा मारते हो । पन्नालाल इसे भट्ठे पर रखकर बहुत पछता रहा है – हटा भी नही सकता – क्योंकि मजदूरों का गैंग लीडर बन गया है वह । हर दिन कोई न कोई उपद्रव करता रहता है वहाँ – उस मुसहरवा गिरधारी के साथ मिलकर ।

कौन गिरधारी ? – वहाँ बैठे लोगों की जिज्ञासा बढ़ गई थी ।

वही जो चार साल पंजाब कमा कर लौटा है – दिलीआइट हिन्दी बोलने वाला – बिरजू के साथ उसकी पूरानी दोस्ती है । दिल्ली पंजाब कमाने दोनों साथ–साथ गये थे । परदेश कमाई के बाद अब तो ईंट भट्ठे पर दिन–रात का साथ है दोनों का । नाला रोड के मूसहर धांगड़ों की पूरी जमात उसी की है । इसी भीड़ को लेकर तो दोनों ने मंदिर में बवाल मचाया था । दोगला ब्रीड है दोनों का ।

महेश के अंतिम वक्तव्य पर लोग खिलखिला पड़े थे । तभी गोस्वामी जी के साले सोमनाथ ने एक जिज्ञासा व्यक्त की – उस दिन कचहरी में वह पुतरिया कौन थी भाई जो जुलुस के आगे–आगे हाथ लहराती गा रही थी ?

वह अम्बेदकर नगर की मॉडल गर्ल है । नाम है मिन्ती – सुभद्रा मैडम के अनौपचारिक केन्द्र पर अनुदेशिका के पद पर काम करती है । चीफ मिनिस्टर से सम्मानित भी हो चुकी है वह ।

उपस्थित समुदाय में से किसी ने मिन्ती का गंभीर परिचय दिया । सोमनाथ की आँखें फैल गईं – 'अच्छा तभी नये पंख लगाकर उड़ रही है फुर्र–फुर्र –'

'लेकिन सोमनाथ बाबू वह तितली नहीं बिर्रनी है – पकड़ने की कोशिश न कीजियेगा – '

महेश के इस मजाक पर जबरदस्त हंसी का फव्वारा छूटा ।

कालीचरण उस समय अपने बड़े भाई की गंभीर मुख मुद्रा को देख रहा था ।

उससे हँसा नहीं गया । उसने गंभीर स्वर में कहा – देखिये हँसी दिल्लगी छोड़िये –रणनीति पर विचार कीजिये । मेरा मनना है कि हमारा चुनावी कार्यालय अम्बेदकर नगर के भीतर हो । इसके लिए बहनजी का सेंन्टर सबसे माकूल जगह है । वहाँ से बस्ती की भीतरी सरगर्मी का पता चलेगा और बिरजू की सेंधमारी पर भी नजर रहेगी । यह बस्ती पहले भी हमारे अधिकार में थी – इसबार भी खिलापिला कर जैसे भी हो इसे अपने अधीन करना है ।

'लेकिन काली बाबू यह इतना आसान नहीं है । आपको नहीं मालूम विरजू का लंगोटिया यार रमैया और बहनजी की मॉडल गर्ल मिन्ती दोनों अपनी बस्ती में बिरजू के लिए कमर कस कर खड़े हैं । इस अखाड़े में विरजू राम को उतारने वाला रमैया ही है । नामांकन के दिन कचहरी में सबसे अधिक ताव में वही दीख रहा था।'

स्कूल शिक्षक दीनदयाल की इस बात पर सोमनाथ की भृकुटि तन गई – अम्बेदकर नगर में यह नया हीरो कब पैदा हुआ ?

पैदा तो वह तेईस–चौबीस साल पहले हुआ होगा लेकिन हीरो बनने की तैयारी अब कर रहा है – दीनदयाल बाबू के स्वर में परिहास था – थोड़ा अंग्रेजी पढ़ना लिखना जानता है – दरअसल भंगी समुदाय का मैट्रीक फेल हीरो है वह । दीपतारा सरकारी अस्पताल में ड्रेसर का काम करता है और इधर कुछ महीने से विरजू के साथ मिलकर –'दलित युवा मोर्चा' के नाम से एक पलटन तैयार कर रहा है ।

ये सब साले अम्बेदकर की औलाद सचमुच अपनी औकात भूल गये हैं – सोमनाथ बाबू गुस्से से तिलमिला गये थे । उनकी इस टिप्पणी पर अचानक कालीचरण के भीतर एक उबाल उठा । क्रोध से बिफरते हुए उसने कहा – चलिए जीप में बैठिए ड्राईंगरूम पॉलिटिक्स करने से कुछ नहीं होगा ।

□ □ □ □

सेन्टर पर इन दिनों पढ़ाई लिखाई का काम बंद था । हरिचरण गोस्वामी के आग्रह को बहनजी नहीं टाल सकीं थीं और उन्होंने गोस्वामी जी को वहाँ कार्यालय खोलने की इजाजत दे दी थी । उसी दिन केन्द्र पर गोस्वामी जी के चुनावी कार्यालय की तख्ती लटक गई । जीप ,कार ,मोटर साईकिल , पर्चे , पंपलेट ,इश्तेहार , लोगों की गहमागहमी से वहाँ का नजारा ही कुछ और हो गया था । मुँह फाड़ कर दहाड़ता हुआ खुंखार शेर गोस्वामी जी का चुनाव चिन्ह था । सेन्टर के द्वार पर दहाड़ते हुए सिंह के पोस्टर को देख कर मिन्ती बहुत आश्चर्य में पड़ गई थी क्योंकि दो दिन पहले विरजू और रमैया बहन जी से यही आग्रह करने गये थे तो बहन जी ने कहा था – अनौपचारिक केन्द्र सरकारी यूनिट होता है विरजू – इसे चुनावी दफ्तर नहीं बनाया जा सकता । तुम लोग बस्ती के भीतर ही कोई और जगह ढूढ़ लो ।

लौट कर रमैया ने मिन्ती को बताया था – 'इस चुनाव में तुम्हारी बहनजी का भी मुखौटा उतरने वाला है मिन्ती – वह भी इसी वार्ड की मतदाता हैं – देखना वे किसे अपना वोट देतीं हैं ?'

मिन्ती को बहुत बुरा लगा था । रमैया पर उसे बहुत क्रोध भी आया था । वह सोचने लगी थी – बहनजी के कारण ही हमारी बस्ती में रोशनी आई है – औरतें दो चार आखर पढ़ने लिखने लगीं हैं । वे हमेशा हमारा भला चाहती हैं पर न जाने क्यों रमैया उनके पीछे पड़ा रहता है । पहले भी कितनी बार मुझसे कहा है – 'मुख्यमंत्री से अम्बेदकर सम्मान पाने वाली बहनजी को समझना इतना आसान नहीं है। – वे शातिर
खिलाड़ी हैं , तू नहीं समझेगी यह सब ।'

वह झनक उठी थी – 'मुझे नहीं समझना यह सब – वे जो भी हों मेरे लिए तो भगवान हैं –'

लेकिन आज सेंटर पर गोस्वामीजी के चुनावी कार्यालय को देखकर मिन्ती के विश्वास को गहरा धक्का लगा था । उसे बार–बार दहाड़ते हुए सिंह का खुला मुँह , खूंखार आँखें याद आ रही थीं ।

□ □ □ □

दूसरे दिन अम्बेदकर नगर के भीतरी भाग में जहाँ कीचड़ से भरे गड्ढे में सूअर अपनी थूथनी डूबाये

घों घों करते रहते थे – डोम चमार के नंग धड़ंग बच्चे जहाँ खेलते कूदते हुड़दंग मचाते रहते थे और जहाँ पूरी दोपहर औरतें झोंटे खोलकर जुएं निकालती , गन्दी गन्दी गालियों में हाथ मुँह चमका चमका कर झगड़ा करती रहती थीं , वहीं बांस का एक मचान गाड़कर विरजू का चुनावी कार्यालय खुला था । नाला रोड और बहलखाना रोड के बदले अम्बेदकर नगर में इस कार्यालय के खुलने से गोस्वाती के कार्यकर्त्ता चिहुंक गये थे ।

'तू डाल डाल मैं पात पात' रमैया , बिरजू और गिरधारी की तिकड़ी को वे हर जगह इसी रूप में देख रहे थे । उस कार्यालय के बाहर हर समय बस्ती के युवाओं का जत्था जमा रहता । रमैया और गिरधारी इस जत्था के मेठ थे । उनके कार्याकर्त्ताओं के पास न इश्तहार थे , न पर्चे ,न प्रचार गाड़ी लेकिन जोश और उत्साह से भरे वे अपने समुदाय को एकजुट करने में दिन रात लगे थे । पैदल मार्च करते हुए वे लोग बी० डी० रोड से ए० नगर तक घूमते हुए एक ही बात की गुजाररिश करते – 'पहली बार हमारे बीच का एक सिपाही मैदान में उतरा है – उसे हर हाल में जीताना है । वे बड़े लोग हैं –खरीदने आयेंगे तुम्हें – लेकिन भाईयों – दारू और नोट पर बस्ती का ईमान बिकने न पाये – यह साहस दिखाना होगा तुम्हें तभी इस लड़ाई में जीत सकेंगे हम ।'

उनकी बातें बस्ती के भीतर एक नई चेतना पैदा कर रही थी । इन बातों से लोग गोलबंद होकर उनके करीब आने लगते । उस समय रमैया उनकी आँखों में उंगली डालकर उन्हें अपनी स्थिति पर गौर करने के लिए ललकारते हुए कहता – 'गोस्वामी ने क्या किया हमारे लिए बताओ ? अपने लेन की सारी सड़कें पक्की कराई – नाले बनवाये – बड़ा बड़ा भेपर वाला लाल पीला लाईट लगवाया – लेकिन एक बार भी इस अंधेरी बस्ती का खयाल नहीं आया उन्हें ।

अपनी झोपड़ियों के आगे पीछे इन नालियों और गड्ढों की तरफ देखो । इस गड्ढे में गिरकर बस्ती के दो दो बच्चे एक साथ पीछले साल मर गये । उस समय भी इस वार्ड के मालिक श्री हरिचरण गोस्वामी, मंगला और बुधिया को ढ़ाढ़स बंधाने तक नहीं आये – इसलिए न कि हम डोम चमार हैं – हमारे दुःख से उन्हें कोई वास्ता नहीं । हम उनके हगे मुते को सिर पर उठाते हैं और उन्हें हमारी इतनी सी भीद परवाह नहीं ।

लोग गौर से सुन रहे थे । बस्ती की हवा गर्म होकर ऊपर उठने लगी थी ।

रमैया ने फिर अपनी बात शुरू की – आपलोग कब से देख रहे हैं मुनसपेल्टी का पानी बहलखाना रोड के आधे हिस्से तक आया और ए० नगर में पाईप तक नहीं बिछा । पूरी बस्ती एक चापाकल पर भोर से सांझ तक पानी के लिए किलोल करती है । इस पानी के लिए कभी कोई सुनवाई हुई हमारी ? वह कैसा राजा जो प्रजा का कोई दुःख ही न सुने ?

रमैया की इन बातों का असर लोगों पर होने लगा था । भीड़ की शक्ल बदलने लगी थी । झुकी गर्दन , टेढ़ी कमर तनने लगी थी । यह उनके खामोश जुवान के मुखर होने का समय था जिसे भांप कर गिरधारी ने अपने हाथ हवा में लहराते हुए जोर से हॉक लगाई – 'हमारा नेता कैसा हो'

भीड़ उससे ऊँची आवाज में शंखनाद करती हुई मुखातिब हुई –'विरजू भाई जैसा हो'

दबे कुचले लोगों के भीतर अस्तित्वबोध का यह पहला सामूहिक उद्घोष था जिससे पूरी बस्ती उद्वेलित हो गई थी और हरिचरण गोस्वामी की रातों की नींद उड़ गई थी ।

□ □ □ □

इन दिनों मिन्ती बहुत रोमांचित थी । इस बार उसका भी फोटो पहचान पत्र बना है – तस्वीर खींची गई है –इसबार वह भी वोट डालेगी और हरिचरण गोस्वामी की जगह विरजू को जितायेगी – यह सोचकर उसके भीतर झुरझुरी सी होती थी । मतदान क्या होता है – किस तरह पेटी में डाला जाता है – उससे कैसे व्यवस्था बदलती है – पहले मिन्ती को कुछ भी मालूम नहीं था लेकिन इसबार विरजू रमैया और गिरधारी ने उसे सब कुछ बताया है । पहली बार वह भी अपने बस्ती में प्रचार के शोर शराबे को इतनी नजदीक से देख रही थी । रमैया तो हर दिन तोते की तरह रटाता रहता है उसे – देख तू पहली बार वोट डाल रही है । नाम पढ़ लेना 'विरजू' – बस वहीं नजर गड़ाना और हाँ – अपने नेता का चुनाव चिन्ह तो जानती है ना ? 'चिमनी से निकलता धुँआ'' – बस उसी नाम – उसी चिन्ह के सामने बटन

दबाना पी ऽ ऽ ऽ – इधर उधर हरगिज नहीं । और सुन ! ईंट भट्टे के बगल में दहाड़ता हुआ शेर भी दिखेगा उससे डर कर कहीं गोस्वामी के नाम पर ना मोहर लगा देना – सब सत्यानाश हो जायेगा ।

मिन्ती टेढ़ी नजरों से उसे घुरती हुई गुस्से से बिफर कर कहती – 'मुझे इतना बेवकूफ समझता है और तू सबसे होशियार क्यों ?'

रमैया का कलेजा उसकी तिरछी चितवन की छूरी से दो टूक हो जाता । लाड़ चुआती मिन्ती कितनी अच्छी लगती है । 'हाय ! तू किसके लिए बनी है मिन्ती ?'

'तेरे लिए तो हरगिज नहीं' – वह खिलखिलाकर हंसती हुई उसकी आँखों से ओझल हो जाती ।

वोट के तीन दिन पहले बहनजी को अपनी बस्ती में हरिचरण गोस्वामी के साथ घूमते देखकर मिन्ती भौंचक्क थी । रमैया शायद ठीक ही कहता है – बहनजी का चेहरा , उनकी बातें सब आज मिन्ती के लिए अबूझ पहेली हो गये थे ।

हरिचरण गोस्वामी , कालीचरण और सोमनाथ के साथ आज बहनजी उसकी बस्ती में घर घर जाकर लोगों को गोसवामीजी को वोट देने के लिए तैयार कर रही थीं । वे सबसे मनुहार करती हुई कह रही थीं – 'मेरे कहने पर बस इसबार एक मौका इन्हें फिर से दीजिए – ये इस बस्ती को आदर्श नगर बनायेंगे – आप सबों की सारी समस्याओं का निदान करेंगे – सड़क , नाली , पानी , बिजली हर सुविधाएं आपके लिए जुटायेंगे – मेरे कहने पर इस बार इन्हें अपना प्रतिनिधि चुनकर सेवा का मौका दीजिए । मैं विश्वास दिलाती हूँ – आपके सारे अरमान पूरे होंगे – घर घर बिजली बत्ती जलेगी – पाईप का पानी बस्ती तक आयेगा – नाली सड़क सबकी व्यवस्था होगी । सेंटर का रूप भी निखरेगा – मेरे मन में कई तरह की योजनाएं हैं जिसे गोस्वामीजी के साथ मिलकर मैं आपलोगों के लिए शुरू करूँगी लेकिन इसके लिए जरूरी है कि पहले आप इन्हें विजयी बनायें तभी हमारे सपने पूरे होंगे ।'

बहनजी बस्ती के सामने लोगों के बीच खड़ी होकर बहुत मीठे स्वर में कह रही थीं ।

विरजू अभी बच्चा है – उसे आपलोग समझाइये – चुनावी दंगल में कूदने की उम्र नहीं है अभी उसकी । जीवन का कुछ अनुभव हो जाये फिर यह सब करना ठीक लगता है । गोस्वामीजी अनुभवी हैं – उसके अभिभावक जैसे हैं – उनकी बराबर में अभी कमर कसना उसके लिए मुनासिब नहीं ।

मिन्ती दूर खड़ी सब कुछ सुन रही थी । उसे आज पहली बार बहनजी दूसरी दिख रही थीं । उसका भरोसा टूट रहा था – रमैया ठीक कहता है सचमुच शातिर खिलाड़ी हैं बहनजी ।

'अरे मिन्ती ! तू इतनी दूर क्यों खड़ी है उधर – आजकल सेंटर पर भी नहीं दिखती – क्या करती है सारा दिन उधर ?'

'सेंटर तो चल नहीं रहा है बहनजी – फिर क्या करूँगी उधर आकर'

अरे , बहुत सारे काम हैं तेरे करने के लिए । आ इधर तुझे गोस्वामीजी से मिलवाऊँ । उन्होंने सेंटर पर तुम लोगों के बनाये 'वॉल हेंगिंग' वाले नक्कासीदार सुप दौरे की बड़ी सराहना की है । कह रहे थे जितेंगे तो तुम लोगों की बनायी चीजों की बड़ी प्रदर्शनी टाउन हॉल में लगवायेंगे । इस बस्ती की महिलाओं और बच्चों के लिए बहुत कुछ करना है उन्हें । सेंटर पर बिजली बत्ती की उम्दा व्यवस्था कराने की बात कही है उन्होंने ताकि रात में भी बच्चे और महिलायें पढ़ाई लिखाई , सिलाई बुनाई का काम कर सकें । शौचालय और म्युनिसपैलिटी के पाइप लाईन की भी व्यवस्था करेंगे । एक चापाकल तो उन्होंने अभी से गड़वा दिया है ।

मिन्ती आँखों में हैरानी भरकर एकटक बहनजी का मुंह देख रही थी । गोस्वामीजी हाथ जोड़े मंद मंद मुस्काते सबसे मिलकर अपनी विनम्रता प्रकट कर रहे थे । उनके साले सोमनाथ और भाई कालीचरण

बच्चों को मिठाई खाने के नाम पर खुलकर रूपये बाँट रहे थे । औरतों और बच्चों की भीड़ उन्हें घेरकर खड़ी थी । अचानक मिन्ती के भीतर एक ज्वार की तरह प्रतिकार का स्वर फूटता है – 'डोम चमार के बच्चे मिठाई नहीं खाते – पसीने का नमक चाट कर जिन्दा रहते हैं । पैसे का लोभ देकर नहीं खरीद सकते आप इन्हें । हम गरीब हैं लेकिन बिकाऊ नहीं । अपने बूते आखिरी घड़ी तक इस लड़ाई में डटे रहेंगे हम ––– और बहनजी आप ? आप भी इनके साथ –––'

उत्तेजना से उसका चेहरा दक–दक लाल हो उठा – कंठ में आवाज अवरूद्ध हो गई ।

बहनजी अवाक होकर उसकी ओर देखती रह गई – क्या यह वही मिन्ती है जो उसकी हर बात को ब्रह्मवाक्य समझकर शिरोधार्य करती आई है ? जिसे 'मॉडल गर्ल' के रूप में प्रस्तुत करके उन्होंने मुख्यमंत्री से अम्बेदकर सम्मान पाया है । इसे हो क्या गया है आज ? पूरी बस्ती के सामने इस तरह प्रतिरोध कर रही है मेरा ?

गोस्वामीजी ने सेन्टर की बढ़ोत्तरी के लिए कितने वादे किये हैं मुझसे – आखिर इन सबका लाभ तो इन लोगों को ही मिलेगा न ! यही सब सोचकर तो मैंने गोस्वामीजी को एक मौका देने का मनुहार किया इन लोगों से और मिन्ती को देखो मुझे इस तरह कठघरे में खड़ा करके सवाल कर रही है ?

उनकी कनपट्टी की नसें झनझना रही थीं इस आक्षेप से लेकिन उन्होंने तुरंत खुद पर काबू पाया और मिन्ती को अपने करीब बुला कर गंभीर स्वर में कहा – 'क्या मुझ पर भरोसा नहीं रहा तेरा ?'

पत्थर की तरह वजनी आवाज के नीचे मिन्ती के होठ थरथरा कर स्थिर हो गये । उसकी पिपनियों पर पानी छलक आया लेकिन आंखों में एक लौ अब भी जल रही थी । सोमनाथ भूखी आंखों से उसके इस दहकते रूप को निहार रहा था । तभी रमैया और गिरिधर के अप्रत्याशित रूप से वहाँ आ जाने पर भीड़ तितर बितर होने लगी । चुनावी अभियान में निकले उम्मीदवारों का रूख भी दूसरी ओर मुड़ गया ।

□ □ □ □

दूसरे दिन सुबह सबेरे अम्बेदकर नगर में फूस की आग की तरह यह खबर चारो ओर फैली की मिन्ती के बापू हरिया ने गत रात नशे में धुत्त होकर अपनी मेहरारू शंतो की बेरहम धुनाई की और बेटी के बीच में आ जाने पर दबिया से वार करके उसे भी बुरी तरह लहूलुहान कर दिया है । गिरधारी , रमैया और बिरजू ठेला पर लाद कर दोनों को अस्पताल में ले गये हैं । मिन्ती होश में नहीं है ।

इस खबर से लोग सन्न हो गये थे । देखते–देखते अस्पताल परिसर में औरत मर्द की बड़ी भीड़ जमा हो गई थी । मिन्ती के लिए सबके मन में एक कसक थी । लोग दुःख और गुस्से में हरिया को कोस रहे थे ।

''कसाई बाप ने पेट में दबिया घोंपा है । जख्म गहरा है । – पता नहीं क्या होगा ? डॉक्टर कामत ने मिन्ती का ऑपरेशन किया है लेकिन वह अभी तक ऑपरेशन थियेटर में ही है । खून बहुत बह गया है – अभी ऑक्सीजन पर ही रखना होगा । डॉक्टर उपचार में लगे हैं लेकिन मिन्ती अभी तक होश में नहीं आई है ।''

भीतर कोई ताक झाँक करके यह खबर लाया था ।

बिरजू और गिरधारी ओ० टी० के बाहर रमैया की प्रतीक्षा में खड़े थे । बीच रात में मिन्ती को अस्पताल पहुंचाने के बाद से ही रमैया कहाँ लापता हो गया है – किसी को मालूम नहीं । शंतो सूजा मुँह और दर्द से नील पड़ी टभकती देह लिए अस्पताल के बरामदे में निढ़ाल पड़ी थी । बस्ती की औरतें उसे ढ़ांढ़स बंधाती हुई कह रही थीं – 'डागडर भगवान होते हैं शंतो – बचा लेंगे मिन्ती को । पूरी बस्ती का खयाल रखती है तुम्हारी बिटिया – दुर्गा मैया सहाय होंगी उस पर ।''

सबकी सहानुभूति पाकर शंतो हुमक–हुमक कर रो पड़ी थी । रात की घटना उसकी आँखों में बार–बार कौंध जाती थी लेकिन मुँह पर जड़ा ताला कहीं खुल न जाये इसलिए मुँह पर कपड़ा ठूंस कर वह भीतर के आवेग को थामने का प्रयत्न कर रही थी ।

मिन्ती के साथ सेंटर पर जाने वाली औरतें और लड़कियाँ बार–बार पूछ रही थीं उससे – 'आखिर इतना गुस्सा काका को काहे आया काकी कि मिन्ती के ऊपर कत्ता चला दिया उन्होंने । पीना तो उनका रोज का काम है लेकिन ऐसा अन्हेर तो उन्होंने कभी नहीं किया था । आधी रात को इतना पीकर कहाँ से आया था काका ? कुछ तो बताओ काकी – कैसे हुआ यह सब ?

शंतो पत्थर की बुत सी खामोश पड़ी थी । रात की काली परडाईयाँ उसे नागपाश की तरह जकड़ कर खड़ी थीं । बेटी के लिए उसका कलेजा फट रहा था लेकिन हरिया को पूरी बस्ती के सामने नंगा नहीं करना चाहती थी ।

भीड़ में लोग तरह–तरह की अटकलें लगा रहे थे । बारह बजे रात को शंतो के दरवाजे पर किसकी जीप आकर रूकी थी ? घटना के हो हल्ला के कुछ पहले जीप के खुलने की आवाज कुछ लोगों ने बंद घर से सुनी थी – किसकी जीप थी ? कौन थे वे लोग ?

शंतो घुटने में सिर दिये सबकी बातें सुन रही थी – उसका भीतर हाहाकार कर रहा था लेकिन होठ सिले थे ।

तभी रमैया विक्षिप्त की तरह कहीं से प्रकट हुआ । गिरधारी और बिरजू उसे देख कर भौंचक थे । उसके हाथ में रूपये से भरा थैला और दारू की तीन चार बोतलें थीं और वह उत्तेजना से थर–थर कांपता शंतो के सामने दहाड़ रहा था – ''इसी गड्डी पर बिक गया न काका का ईमान ? बोलो काकी इसी पर न ? सब पता करके आया हूँ अभी । हरिया काका और मुंशी हरिहर शर्मा दोनों दलाल बन गये गोस्वामी के । पन्नालाल के ईंट भट्ठी पर नाला रोड , फकीर टोला और मुसहरी टोला के लोगों के बीच नोटों की यही गड्डियाँ और दारू बाँटी गई – हरी पत्तियों पर सब बिक गये – वोट के साथ बेटी का भी सौदा कर दिया बाप ने । कल रात गोस्वामी का साला भी आया था न तुम्हारे घर ? बोलो काकी बोलो – काका ने सोमनाथ से वाटों के साथ–साथ मिन्ती का भी सौदा किया था न गड्डी भरे इसी थैले और दारू के एवज में ?

सारे लोग भौंचक होकर सुन रहे थे । रमैया कहता रहा – ''बेटी बलि चढ़ गई तुम्हारी । बाप नशे में बेसुध होकर सुअर की खोहाड़ी में पड़ा है । क्या हासिल हुआ ईमान बेचकर उसे ?''

अचानक रमैया दुःख और नाउम्मीदी के गहरे अहसास में डूबकर फफक पड़ा – प्रेम और भय का रिश्ता कितना सघन होता है । जीवन–मरण के बीच झुलती लहूलुहान मिन्ती का चेहरा रमैया की आँखों में तैर गया । गिरधारी और बिरजू उसे संभाल रहे थे – ''हम चुप नहीं बैठेंगे रमैया । मिन्ती को होश में आने दो – उजले पोशाक वाले चेहरे पर खुद कालिख पोतेगी वह । चलो एक बार बहनजी से मिलकर कुछ तय करें हम – उन्हें बताना होगा सबकुछ ।''

हरगिज नहीं – रमैया क्रोध से तिलमिलाते हुए चीख उठा – ''बहनजी का नाम मत लो । मिन्ती के विश्वास को उन्होंने भी छला है । धोखा दिया है हम सबको । गोस्वामी के प्रचार में हमारी बस्ती तक खुद चलकर आईं थीं वे – सब भूल गये तुम लोग ––– ?''

रमैया की बातों से वहाँ मौजूद मर्द औरत सब सिर हिलाने लगे थे । अचानक वहाँ का तापमान गर्म होने लगा था । सिविल सर्जन के कक्ष तक बात पहुँच चुकी थी । कुछ मिनटों में ही अस्पताल परिसर में तैनात तीन–चार डंडेधारी पुलिस वहाँ पहुँच गये – ''यहाँ भीड़ क्यों लगा रखी है ? यह अस्पताल है स्टेशन नहीं । डाक्टर मरीज को देखेंगे या भीड़ को ? चलो बाहर निकलो – निकलो बाहर –––''

भीड़ बिखरने लगी लेकिन गिरधारी , बिरजू और रमैया अपनी जगह पर एकजूट खड़े रहे ।

शंतो रेत आँखों से बस्ती के लोगों को जाते देखती रही ।

□ □ □ □

अम्बेदकर नगर के लिए वह कोयले के खान से निकली एक काली सुबह थी । मिन्ती की मौत से दहल गया था पूरा परिवेश । चुनाव के एक दिन पहले ही काली तारीख में दर्ज हो गई थी चुनावी प्रक्रिया –––

उस काली सुबह में जिस दम मिन्ती की लाश को कंधे पर उठाये रमैया , गिरधारी , बिरजू और बस्ती के लोग अस्पताल से बाहर निकल रहे थे , बहनजी हताश और बदहवास सी दौड़ती हाँफती पहुँची थी वहाँ – ''मिन्ती को इन्साफ मैं दिलाऊंगी रमैया –– मैं । वह मेरी अनुभूति की चाक पर चढ़ी वह ईंट

थी जिससे मुझे नये युग , नये काल का शिलान्यास करना था लेकिन हिंसक समय ने पकने से पहले ही धुँआती भट्ठी के भीतर उसे ध्वस्त कर दिया । इस ध्वंस को इतनी आसानी से नहीं भूल सकती मैं । मैं उसके पार्थिव शरीर को लेकर अनशन पर बैठूँगी – मुख्य मंत्री से फरियाद करूँगी – चुनाव कमीशन तक लिख कर भेजूँगी – मैं मिन्ती को इन्साफ दिला कर रहूँगी रमैया – मैं हूँ न तुम सब के साथ । मेरे साथ आओ ।''

''आप हमारे रास्ते से हट जाइये बहनजी । नहीं चाहिए आपका साथ – आपका भरोसा । आपने कहा – मिन्ती आपकी अनुभूति की भट्ठी में धुँआती एक ईंट थी जिससे नये युग का शिलान्यास आपको करना था – लेकिन आपको नहीं मालूम की समय भट्ठी में एक ईंट नहीं कई कई ईंटें एक साथ पकती रहती हैं । कच्ची ईंटों का सुलगता धुँआ आसमान तक पहुँचता है । समय की भट्ठी में कच्ची मिट्टी की छोटी बड़ी गढ़ी अनगढ़ी कई मूर्त्तियाँ भी एक साथ पकती रहती हैं । हिंसक समय के हाथ थक जायेंगे उन्हें तोड़ते ध्वस्त करते । मिन्ती अन्त नहीं है । मिन्ती के बाद बिरजू , गिरधारी , रमैया और न जानें कितनी मिन्तियाँ आपको फिर समय की चाक पर घूमती और समय की भट्ठी में पकती नजर आयेंगी । नई ईंट से नये युग का शिलान्यास अब इन्हीं मूर्तियों में से कोई करेगा – आप नहीं । आप हमारी राह पर अपने नाम का शिलापट्ट न लगायें तो अच्छा –––
हटिये हमारे रास्ते से – हमें दूर जाना है – मिन्ती की दहकती चिता से एक लुकाठी लेकर ।''

बहनजी एक ओर हट गईं । उनका चेहरा देखने लायक था – दरके हुए आईने में खुद को निहारता – एक चनका चेहरा ।

शहर आज सुलगती ईंटों के धुँए से काला दिख रहा था ।

□ □ □ □

संपर्क

चतुर्भुज ठाकुर मार्ग ,गन्नीपुर
पो० – रमना ,
जिला –मुजफ्फरपुर , बिहार 842002
मोबाइल – 09431281949 / 9572222102
e-mail -poonamkalam@gmail.com